E-ISSN: 2583-9667
Indexed Journal
Peer Reviewed Journal
https://multiresearchjournal.theviews.in

Received: 21-06-2023
Accepted: 28-07-2023

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCE RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY

Volume 1; Issue 1; 2023; Page No. 718-721

विवेकी राय के उपन्यासों में ग्रामीण जीवन की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं धार्मिक समस्याओं का संक्षिप्त मूल्यांकन

[1]आनन्द सावरण और [2]डॉ. नवनीता भाटिया

[1]शोधार्थी, ग्लोकल स्कूल ऑफ आर्ट्स एण्ड सोशल सांइसेज, द ग्लोकल यूनिवर्सिटी मिर्जापुर पोल, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत
[2]शोध निर्देशक, एसोसिएट प्रोफेसर, ग्लोकल स्कूल ऑफ आर्ट्स एण्ड सोशल सांइसेज, द ग्लोकल यूनिवर्सिटी मिर्जापुर पोल, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: आनन्द सावरण

सारांश

विवेकी राय जी ने अपनी ग्रामीण जीवन के प्रति जो मनोदशा व्यक्त की है उसे पढ़कर ऐसा मालूम होता है कि उनका जीवन दर्शन ग्रामीण परिपेक्ष में अधिक रमा है इस कारण से कहा जा सकता है कि गाँव के विषय में जो बात कही जाती है कि भारत गाँव में बसता है यह बात सौ फीसदी सच है किंतु बड़े पदों पर आसीन होने वाले अधिकारियों नेताओं ने गाँव के ह्रदय मानस कि हमेशा चिंता नहीं की और गाँव आज बिछड़ते और पिछड़ते चले गए जिस प्रकार विवेकी राय जी बताते हैं कि मैं शहरी बनना चाहता था किंतु मेरी दृष्टि गाँव में अधिक रमी और मैं शहर में भी आकर के शहरी नहीं बन पाया क्योंकि वह एक सच्चे कृषक का जीवन भोग चुके थे इसी कारण वे शहर की विभिन्न प्रकार की जालसाजी का जीवन को नहीं भोगना चाहते थे इसी प्रकार शहर में एक दूसरे के नजदीक होते हुए भी लोग आपस में आदर सत्कार नहीं करना चाहते जिस प्रकार गाँव में आते जाते लोग एक दूसरे को स्वत ही राम–राम कर लेते हैं और ह्रदय के विभिन्न पक्षों को एक दूसरे से लगातार साक्षात्कार करते रहते हैं क्योंकि किसान में कृषक अकेला ही कार्य नहीं करता पूरा परिवार के साथ कार्य करता है इसी प्रकार आस–पड़ोस के सभी कृषक मिलजुल कर एक दूसरे के लिए सुख दुख के साथी होते हैं इसी कारण से यह जो मनोदशा विवेकी राय की हुई यह एक सच्चे ग्रामीण जीवन की है और इसमें कहा जा सकता है आज की आधुनिकता वादी सोच जो शहरों में हावी है जो लोग गाँव को छोड़कर आए हैं अक्सर कहते हुए सुने जाते हैं कि देसी खाना और देसी नहाना यह गाँव की बात है क्योंकि गाँव में हर प्रकार के फल फूल सब्जी सब पहुंच में होता है अधिकार में होता है क्योंकि अपनी मिट्टी से जुड़े हुए किसान मनमाफिक चीजों को उगा सकता है और शहर में आदमी इनका मजा लेने के लिए कृषकों पर आश्रित होता है यह कृषक श्रम होता है जिन्हें शहरी लोग भागते हैं।

मूलशब्दः विवेकी राय, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक समस्याओं

प्रस्तावना

ग्रामीण जीवन के प्रति गहरी रागात्मकता उनके लेखन की अपनी एक खास पहचान है। गंवई जीवन के प्रति ऐसा जुडाव हिन्दी के किसी भी निबन्धकार में सर्वथा दुर्लभ रहा है। रेणु के उपन्यासों ने उपन्यास विधा को नई पहचान और एक नया विशेषण 'आंचलिक उपन्यास' दिया, उसी तरह विवेकी राय के निबन्ध भी निबन्ध विधा के भीतर खुद को आंचलिक निबन्ध के रूप मे अलग पहचन दे पाते, यदि आचर्य द्विवेदि और उनके पर्वर्ती निबन्धकारों ने 'ललित निबन्ध' पद को स्वीकार कर सारे व्यक्ति–व्यंजक निबन्धों को इसकी परिभाषा में समहित न कर लिया होता। 'नवनिकष' के विवेकी राय विशेषांक में प्रकाशित अपने आत्मकथ्य में उन्होंने कहा है–"मेरे लेखन की पष्ठ्भूमि ग्राम–जीवन है। वास्तव में वही मेरा जीवन भी है। लगभग आधी उमर धुर देहत के एक गाँव मे गुजारने के बाद एक अत्यन्त पिछडे और छोटे शहर में आया भी तो शहरी नहीं बन पाया। एक पैर गाजीपुर में रहता है तो एक पैर गाँव सोनवानी में रहता है। भारत सरकार की कृपा से गाँव वाले पैर को आराम बहुत है क्योंकि गाजीपुर से गाँव पर जाने के लिए छोटी लाइन के पांचवे स्टेशन ताजपुर–डेहमा पर उतरने के बाद जाडे–गरमी के दिनों में डेढ घंटा पदयात्रा करना अनिवार्य होता है। बाढ–बरसात के दिनो में यह समय दुगुना से ले कर चौगुना तक हो जाता है। सडक एक दुःस्वप्न है। भारत के लाखों गावों की भांति अभी मेरा गाँव भी बिजली और सडक से वंचित है।"(पृष्ठ–७) यही कारण है कि उनके यहां ग्रामीण जीवन के प्रति गहरी लोक–संसक्ति है। उन्होंने अपने समूचे लेखन में गाँव को बेहद संजीदगी से जिया है। प्रेमचन्द के 'लमही' और विवेकी राय के 'सोनवानी' में फर्क है। लमही बनारस से बहुत नजदीक है और इसलिए शहर से गाँव का लगभग सीधा सम्वाद भी है, गाँव और शहर के बीच सम्वाद की यह झलक प्रेमचन्द के लेखन में बार–बार दिखाई भी देती है। 'गोदान' में भी ग्रामीण और शहरी परिवेश की एक साथ

उपस्थिति है। होरी, धनिया, गोबर, मतादीन, सिलिया आदि ग्रामीण पत्रों के साथ ही रायसाहब, मेहता, मालती, खान्ना जैसे नगरीय जीवन के अभ्यस्त पात्र भी हैं। लेकिन, विवेकी राय ने जिस गाँव की बात की है वह इससे अलग है। यदि सीधे–सीधे कहने की सुविधा हो तो यही कहा जा सकता है कि प्रेमचन्द के यहां ग्रामीण जीवन का चित्रण है और विवेकी राय के यहां गंवई जीवन और परिवेश की आत्मीय उपस्थिति। गंवई जीवन के प्रति उनके जैसी आत्मियता और उसमें घटित होने वाले बदलावों का वैसा सूक्ष्म रेखांकन केवल फणीश्वर नाथ रेणु के उपन्यसों में ही देखा जा सकता है।

विवेकी राय पूर्वाञ्चल के जातीय कथाकार हैं। शिवप्रसाद सिंह के बाद पूर्वी उत्तर प्रदेश की सामाजिक–सांस्कृतिक अवस्थिति को इतने व्यापक ढंग से कथा–साहित्य में उन्होंने ही प्रस्तुत किया।इस अंचल की आबोहवा का निर्माण प्रायः किसान जातियों के द्वारा हुआ है।इसमें दया, करुणा, सहानुभूति और सरलता है, तो ईष्या–डाह और पाखण्ड भी है।विवेकी राय का कथाकार इसी में निर्मित हुआ है।वे इसमें से कुछ चुनते या छांटते–बराते नहीं हैं, बल्कि उसे पूरा का पूरा प्रस्तुत कर देते हैं।जो कहीं कहानी–उपन्यास तो कहीं निबन्ध का रूप धर लेता है।

विवेकी राय का लेखन आजादी के बाद शुरू होता है।1952 के आस–पास का यह समय है।नई कहानी के प्रायः कहानीकार इसी समय के इर्द–गिर्द लिखना प्रारम्भ करते हैं।नये आजाद हुए देश की रूमानियत और हहाती वास्तविकताएं एक साथ प्रकट होती हैं।एक राष्ट्र बनना शुरू होता है।इसमें कई परम्पराएं, रूढ़ियां, दुर्बलताएं मौजूद हैं।मूल्य और नैतिकता के स्तर पर इस बनते राष्ट्र में पिछड़ापन अधिक है।वह प्रायः वर्णवादी है।आधुनिक मूल्य–बोध से इसकी गहरी टकराहट है।द्वन्द्व, अंतर्विरोध, विसंगतियां इसी टकराहट में जन्म लेती हैं।इस दौर के अन्य कहानीकारों की भांति विवेकी राय भी इससे गुजरते हैं, दर्ज करते हैं। वे उतने व्यवस्थित भले न हों, जितने कि पूर्वाञ्चल के उनके समकालीन अमरकान्त, मार्कण्डेय और शिव प्रसाद सिंह थे।विवेकी राय अंत तक इनके जैसी कथा–भाषा भी प्राप्त नहीं कर पाये, लेकिन पूर्वाञ्चल के जीवन–जगत का व्यापक फलक वे कहीं अधिक छूते हैं।

ग्रामीण जीवन की अवधारणा

आंचलिकता शब्द अंग्रेजी के 'रिजन' शब्द के पर्याय रूप में प्रयुक्त हुआ है। अंग्रेजी में 'रिजनल नावेल' की सुस्थिर परम्परा रही है। अंचल शब्द का अर्थ किसी ऐसे भूखंड, प्रांत या क्षेत्र विशेष है, जिसकी अपनी एक विशेष भौगोलिक स्थिति, संस्कृति, लोकजीवन, भाषा व समस्याएं हों। एक आंचलिक लेखक एक विशेष क्षेत्र पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है और इस क्षेत्र और वहां के निवासियों को अपनी कथा का आधार बनाता है। आज हम जिस उपन्यास का परिचय देने जा रहे हैं उसके लेखक श्री विवेकी राय जी का कहना है, "'सोनामाटी' की पृष्ठभूमि में पूर्वी उत्तर प्रदेश के दो जिलों, गाजीपुर और बलिया, का मध्यवर्ती एक विशिष्ठ अंचल है करइल। इस अंचल का भूगोल तो सत्य है परन्तु इतिहास अर्थात्प्रस्तुत कहानी में प्रयुक्त करइल क्षेत्र के उन गाँवों और पात्रों आदि के माध्यम से समकालीन जीवन–संघर्ष को चित्रांकित किया गया है। यह संघर्ष किस सीमा तक एक अंचल का है और कहां तक वह व्यापक राष्ट्रीय जीवन यथार्थ से जुड़ा है, इसका निर्णय तो पाठक ही कर सकता है।"

ग्रामीण जीवन की सामाजिक समस्याएँ

विवेकी राय जी ने अपनी ग्रामीण जीवन के प्रति जो मनोदशा व्यक्त की है उसे पढ़कर ऐसा मालूम होता है कि उनका जीवन दर्शन ग्रामीण परिपेक्ष में अधिक रमा है इस कारण से कहा जा सकता है कि गाँव के विषय में जो बात कही जाती है कि भारत गाँव में बसता है यह बात सौ फीसदी सच है किंतु बड़े पदों पर आसीन होने वाले अधिकारियों नेताओं ने गाँव के ह्रदय मानस कि हमेशा चिंता नहीं की और गाँव आज बिछड़ते और पिछड़ते चले गए जिस प्रकार विवेकी राय जी बताते हैं कि मैं शहरी बनना चाहता था किंतु मेरी दृष्टि गाँव में अधिक रमी और मैं शहर में भी आकर के शहरी नहीं बन पाया क्योंकि वह एक सच्चे कृषक का जीवन भोग चुके थे इसी कारण वे शहर की विभिन्न प्रकार की जालसाजी का जीवन को नहीं भोगना चाहते थे इसी प्रकार शहर में एक दूसरे के नजदीक होते हुए भी लोग आपस में आदर सत्कार नहीं करना चाहते जिस प्रकार गाँव में आते जाते लोग एक दूसरे को स्वत ही राम–राम कर लेते हैं और ह्रदय के विभिन्न पक्षों को एक दूसरे से लगातार साक्षात्कार करते रहते हैं क्योंकि किसान में कृषक अकेला ही कार्य नहीं करता पूरा परिवार के साथ कार्य करता है इसी प्रकार आस–पड़ोस के सभी कृषक मिलजुल कर एक दूसरे के लिए सुख दुख के साथी होते हैं इसी कारण से यह जो मनोदशा विवेकी राय की हुई यह एक सच्चे ग्रामीण जीवन की है और इसमें कहा जा सकता है आज की आधुनिकता वादी सोच जो शहरों में हावी है जो लोग गाँव को छोड़कर आए हैं अक्सर कहते हुए सुने जाते हैं कि देसी खाना और देसी नहाना यह गाँव की बात है क्योंकि गाँव में हर प्रकार के फल फूल सब्जी सब पहुंच में होता है अधिकार में होता है क्योंकि अपनी मिट्टी से जुड़े हुए किसान मनमाफिक चीजों को उगा सकता है और शहर में आदमी इनका मजा लेने के लिए कृषकों पर आश्रित होता है यह कृषक श्रम होता है जिन्हें शहरी लोग भागते हैं।

ग्रामीण जीवन की राजनीतिक समस्याएँ

निबन्ध विधा के भीतर भी उनकी पहचान का एक मजबूत आधार ग्रमीण जीवन के प्रति गहरा लगाव है। 'उठ जाग मुसाफिर' संग्रह के दो निबन्ध 'चिन्ता भारत के उजडते गावों की' और 'गाँव पर बनाम गाँव में' तो शीर्षक से ही ग्रामीण परिवेश से जुडाव व्यक्त करते हैं। 'तिनडंडिया चोट से उभरा समय और सवाल' शीर्षक निबन्ध में उन्होंने लिखा है,– "सायंकाल किसी के खेत में 'कोठा' छूट जाने का अनुमान होता, अर्थात लगता कि खेत का कुछ भाग छूट जाएगा, तो कुछ समय पहले काम समाप्त हुए किसी भाई का सहयोग मिल जाता–बिना मांगे भी। एक दिन मुझे भी अकस्मात ऐसा ही सहयोग मिल गया और सूर्यास्त होते–होते 'मेरा कोठा मार दिया गया'। यह प्रेम,भाईचारा,सहयोग और सहकार का अमृत है, जिसे पीकर अकाल पीडित गरीब गाँव जीवित है। साठ–सत्तर साल पूर्व का था यह जीता जागता परिदृश्य। स्वराज्य, विकास, नई खेती, नए ढांचे, नई–नई साधन–सम्पन्नता, सुविधा, नए तन्त्र–यन्त्र और मनी–मन्त्र में फंस किसान निरानन्द और गाँव उदास क्यों हो गए ? यह तुम्हरी कैसी सुराजी विकास की नई यान्त्रिक–व्यापरिक खेती है, जिसने ग्राम–देवता को मार डाला और गाँव भलमानुस–विहीन हो गया? (८५–८६)। यहां स्वराज, पंचायती राज और समन्वित–विकास की सरकारी होर्डिंगों पोस्टरों और बैनरों से इतर, सरकारी स्लोगनों के ठीक उलट, आज के गाँव की वास्तविक तस्वीर है जो पुरानी पिढी की स्मृतियों के गाँव के रूप में आज के गाँव के सामने डट कर खडी है। लेखक स्मृतियों के उस गाँव को अपने लेखन में फिर से जी रहा है।

ग्रामीण जीवन की आर्थिक समस्याएँ

विवेकी राय का मन गाँव–घर और सिवान–मथार में खूब रमा है। अर्ध–नगरीय कस्बाई जीवन से आ जुडने के बावजूद, वह अब भी उनकी सैर करने निकल जाता है। निबन्ध उनकी इसी मनोयात्रा

के सहचर हैं। गाँवों के प्रति गहरा आकर्षण बल्कि, मोह की स्थिति के कारण प्रायः यह महसूस होता है कि उनके यहां एक ही विषय का अतिशय दोहराव है और वे इससे बाहर नहीं निकल पाए हैं। लेकिन यह एक सतही अनुभव है। उनके निबन्धों में आहिस्ते–आहिस्ते उतरा जाय तो ऊपर से बहुत सरल और सीधे लगने वाले या रोचक लालित्यपूर्ण निबन्ध भी बहुत गहरी अर्थ–व्यंजकता, उदात्त जीवन–दर्शन और सामजिक–बोध से सम्पन्न हैं। गाँव उनके लिए शहस्र–शीर्षा, शहस्र–पाद भारत की एक लघु इकाई हैं। कहा जाता है, एक चावल देख कर तसले के भात के पकने का अंदाजा लग जाता है, गाँव तसले के उसी चावल की तरह हैं जिनसे भारत में हो रहे बदलावों की नब्ज टटोली जा सकती है। विवेकी राय गाँवों के बहाने पूरे भारत की बात करते हैं। भूख, बेरोजगारी, बेकारी, शोषण और भ्रष्टाचार जैसी तमाम समस्याएं, उनके यहां इसी माध्यम से व्यक्त हुई हैं। 'फिर बैतलवा डाल पर' संकलन के 'सोने की लूट' निबन्ध में गाँव के दशहरे के बहाने उन्होंने सामजिक–यथार्थ के अनेक धूप–छाहीं रंगों को मिलाकर ललित निबन्ध के फलक पर भारतीय जीवन का एक वास्तविक चित्र अंकित किया है "अब मेरे सामने यह मुट्ठीभर मिट्टी है।यह मिट्टी नहीं लंका का सोना है। सकल विश्व–सम्पदा की राशि को चाकर रखने वाला रावण जल गया। उसकी सोने की लंका में 'रहा न कुल कोऊ रोवनिहारा'। रामराज्य का श्रीगणेश हो गया। काश कि वह दिन दूर न होता जब विश्वमंच पर शोषण,बर्बरता,अन्याय। धर्मान्धता और पैशचिकता के दशानन का बध होता"।

ग्रामीण जीवन की धार्मिक समस्याएँ

अंचल विशेष को आधार बनाकर रची जाने वाली औपन्यासिक कृ ति सहज ही आंचलिक उपन्यास मान ली जाती है। विवेकी राय की कहानियों में उत्तरप्रदेश के गाँवों का बड़ा सजीव चित्रण हुआ है। उन्हें ग्रामीण जीवन का कुशल चितेरा कहा जाता है। वे गावों से हमेशा जुड़े रहे। गाजीपुर और उसके आसपास के गावों का उन्हें विशद अनुभव है। प्रस्तुत उपन्यास "सोनामाटी" भी गाँवों से जुड़ा है। इसमें विस्तृत ग्रामांचल की कहानी है जो गाजीपुर और बलिया के बीच फैला है। आज के टूटते–बिखरते गाँव का सम्पूर्ण सत्य उन्होंने इस उपन्यास के माध्यम से प्रस्तुत किया है। गाँवों में व्याप्त मूल्यहीनता की बात इसमें बहुत ही मार्मिक ढंग से कही गई है। पैसे की संस्कृति से गाँव भी अछूता नहीं है। रामरूप उपन्यास का मुख्य पात्र है। वह जीवन–मूल्यों में विश्वास रखता है। लेकिन वह आज के परिवेश में अपने को मजबूर और कमजोर पा रहा है। उसका ससुर हनुमान प्रसाद रावण की भूमिका निभाता है।

असहाय स्त्री की दयनीय स्थिति व पूरी त्रासदी को बयान करता है यह वक्तव्य। इस उपन्यास में कोइली का अंकन बड़ा ही मर्मस्पर्शी है। वह एक बूढ़े के साथ जुड़ती है, स्वाभिमान की रक्षा के लिए और सारी लालसायें मसलकर रख देती है। उसके अंकन में अत्यन्त आधुनिक संवेदना का स्पर्श मिलता है। सर्वहारा की पहचान तो उसकी पीड़ा है। लेकिन इसमें भी एक बात निश्चित है कि इस वर्ग की स्त्री सबसे पीड़ित होती है। वह समाज की वासना का शिकार भी होती है। हर किसी के द्वारा शोषित और त्रस्त जीवन उसका नसीब हुआ करता है। एक पुरुष सत्तात्मक समाज स्त्री के बारे में कितना नृशंस और अत्याचारी हो सकता है, इसका प्रमाण विवेकी राय जी के इस उपन्यास में मिलता है।

विवेकी राय जी ने इस उपन्यास के माध्यम से यह दर्शाया है कि आजादी के बाद की राजनीति का बिल्कुल ही विघटित रूप गाँवों तक पहुंच गया है। व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के आपसी सम्बन्ध के निर्धारण में राजनीति की सक्रिय भूमिका है। आज राजनीति समाज के सामूहिक हित के अपने लक्ष्य से हटती जा रही है। अब उसने स्वार्थी, असत्य, अनैतिक विघटित तत्वों से खुद को जोड़ लिया है। इस तरह वह गिरोह में बदल गई है। गाँवों में आजादी के बाद का यही विघटित रूप वहां के समाज पर हावी हो रहा है। आंचलिकता जिस ऐतिहासिक चेतना से प्रतिफलित होती है उसमें राजनीति की भूमिका रचनात्मक है। किन्तु "सोनामाटी" में हम जिस राजनीतिक यथार्थ से रू–ब–रू होते हैं, वह आज की राजनीति के अमानवीय हो जाने की गवाही देता है।

लेखक विवेकी राय का गाँव की जनता, विशेषकर किसान जनता के दुख–सुख से गहरा सरोकार है। उनके इस गहरे सरोकार के कारण ही "सोनामाटी" की रचना हुई है। गाँव की जनता संघर्षशील है। उपन्यास में लेखक का सर्वाधिक ध्यान अंचल विशेष की जन–चेतना को चित्रित करने पर केन्द्रित है। उन्होंने जन–सामान्य के प्रति हार्दिक संवेदना महसूस करते हुए चित्रित किया है। साथ ही साथ करइल अंचल की लोक संस्कृति भी सहज रूप से अंकित होती चलती है। समय और समाज ने एक मास्टर को अकेले जूझते और समझौता करते छोड़ दिया है। यही गाँव के बुद्धिजीवी की नियति है। गाँव के रावण का अंकन बहुत ही सशक्त है। लगता है, राम कहीं हिरा गये 'राम का हिरा जाना' मतलब आज रामराज कहीं खो गया है।

निष्कर्ष

डॉ. विवेकी राय जी– इन कथा –आन्दोलनों से मैं जान बूझकर ही नहीं जुड़ा क्योंकि मैं उस आन्दोलनी के खोखलेपन को बहुत निकट से देख रहा था। वे आन्दोलन ऐसे थे जैसे उस दौर की राजनीतिक नारेबाजियाँ। मैं स्पष्ट देख रहा था कि एक ही व्यक्ति कई–कई कथा आन्दोलनों में शामिल रहता था। मैं यह भी स्पष्ट रूप से देख रहा था कि हिन्दी कहानी इन आन्दोलनों के सहारे नहीं बल्कि अपनी शक्ति से आगे बढ़ रही है। ये आंदोलन वाले कहानी के मूल धर्मों को अपने ऊपर नहीं बल्कि अपनी नवीनताओं तथा अपनी नयी मुद्राओं को कहानियों के ऊपर आरोपित कर अपने प्रचार का झण्डा बुलंद करते रहे। वास्तव में यह सब एक प्रकार से आत्मप्रचार का साधना मात्र था, जिससे मुझे कुछ भी लेना–देना नहीं था। हाँ ! इतना तो अवश्य मानना पड़ेगा कि इन आंदोलनों से कहानी साहित्य में कोई क्षति नहीं हुई बल्कि गहमा–गहमी के इस वातावरण से कथा–साहित्य के विकास में कुछ लाभ ही हुआ।

विवेकी राय के अभिव्यक्ति के मुख्य विषय भाषा, संस्कृति, गाँव और राष्ट्र हैं। उन्होंने भाषा की वर्तमान स्थिति पर कई निबंध और कहानियों में चर्चा की है और सरकार की भाषा संबंधी गलत नीतियों की आलोचना भी की है। विवेकी राय भोजपुरी–प्रेमी और हिंदी–सेवी रहे हैं। भोजपुरी के शब्द, कहावतें और मुहावरें हिंदी साहित्य के सौंदर्य में और भी अधिक निखार एवं सरसता लाते हैं। संस्कृति के अधःपतन पर भी उनका मौलिक चिंतन हैं। परिवर्तित गाँव और आधुनिकता के कारण भारतीय संस्कृति अपना अस्तित्व खोती जा रही है। यह गाँव के लिए ही नहीं, देश के लिए भी खतरा है। 'सोना माटी' में इस पर विस्तृत चर्चा की है। इसके साथ ही 'समर शेष है' 'लोकऋण', 'बबूल', 'श्वेत–पत्र' और 'मंगलभवन' में लोकगीत, लोककथाएं, लोकप्रथाएं, रस्म–रिवाज, राष्ट्रगीत आदि प्रचूर मात्रा में है।

संदर्भ

1. अंतिम दशक के उपन्यासों में ग्रामीण जीवन का चित्रण– डॉ. मोहम्मद जमील अहमद– अन्नपूर्ण प्रकाशन, कानपुर– प्रथम संस्करण– 2006.
2. अंतिम दशक के हिन्दी उपन्यासों का समान शास्त्रीय अध्ययन–डॉ. गोरखनाथ तिवारी– अन्नपूर्ण प्रकाशन– प्रथम

संस्करण– 2008.
3. अक्षर बीज की हरियाली में– डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ– विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी– प्रथम संस्करण– 2002.
4. आंचलिक उपन्यास एकता की खोज– डॉ. आण्टणी पि.एम. जवाहर पुस्तकालय, मधुरा–प्रथम संस्करण– 1993.
5. आंचलिक उपन्यासों में ग्राम्य जीवन–डॉ. उत्तम भाई पट्टेल– क्वालिटी बुक्स एण्ड पब्लिशर्स, कानपुर– प्रथम संस्करण– 1988.
6. आंचलिक उपन्यास और उनके शिल्पविधि– डॉ. आदर्श सक्सेना सूर्यमंदिर प्रकाशन, बीकानेर, राजस्थान– प्रथम संस्करण– 1971.
7. आंचलिक उपन्यास और रेणु– डॉ. सत्यनारायण उपाध्याय– संजय प्रकाशन, बुलानाला, वाराणसी, प्रथम संस्करण, 1980.
8. आंचलिकता और आधुनिकता बोध–डॉ. भगवती प्रकाश शुल्क ग्रन्थ प्रकाशन, कानपुर– प्रथम संस्करण 1972.
9. आंचलिकता और हिन्दी उपन्यास–डॉ. नगीना जैन– अक्षर प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड– प्रथम संस्करण– 1976.
10. आंचलिकता की कला और कथा साहित्य–डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मिश्रा– प्राची प्रकाशन, दिल्ली– प्रथम संस्करण– 1981.
11. आंचलिक उपन्यास संवेदना और शिल्प–डॉ. ज्ञानचंद गुप्त अभिनव प्रकाशन, दिल्ली– प्रथम संस्करण– 1975.
12. आज का हिन्दी उपन्यास–डॉ. इन्द्रनाथ मदान– राजकमल प्रकाशन, दिल्ली– प्रथम संस्करण– 1966.
13. आज का हिन्दी उपन्यास : संवेदना और दृष्टि–डॉ. रामदरश मिश्र– अभिनव प्रकाशन, दिल्ली– प्रथम संस्करण– 1975.
14. आठवें दशक के हिन्दी उपन्यासों में आधुनिकता बोध–डॉ. शोभा देश पाण्डे– चन्द्रलोक प्रकाशन, कानपुर– प्रथम संस्करण– 2008.
15. आधुनिक परिदृश्य : आंचलिकता और हिन्दी उपन्यास–विद्या सिन्हा– वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली– प्रथम संस्करण– 2001.

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.